

दिल्ली में जल संकट समस्या गंभीर

दिल्ली में जल संकट थमने का नाम नहीं ले रहा है, हालांकि सर्वोच्च न्यायालय ने हरियाणा को इस संबंध में निर्देश दिए हैं। राजधानी में जल संकट हरियाणा और हिमाचल प्रदेश द्वारा खासकर गर्मी के महीनों में दिल्ली को अतिरिक्त जल सप्लाई से इनकार करने के कारण गहरा गया है। इनका कहना है कि वे समझौते के अनुसार जल-सप्लाई कर रहे हैं। यह मुद्दा खासकर जटिल है क्योंकि दिल्ली की जल सप्लाई का बड़ा हिस्सा निकटवर्ती राज्यों से आता है। जल संकट से एनसीआर के लाखों लोग तथा अनेक उद्योग प्रभावित हो रहे हैं। यमुना दिल्ली को अधिकांश पानी देती है और पश्चिमी यमुना नहर के माध्यम से हरियाणा इसका मुख्य सप्लायर है। अपनी ओर से हिमाचल प्रदेश सहायक नदियों के माध्यम से इसमें अपना योगदान देता है। राज्यों के बीच वर्तमान जल-साझा समझौतों के महत्व पर सर्वोच्च न्यायालय ने जोर दिया है और इनकी पुष्टि की है। इस संबंध में लगभग एक सप्ताह पहले उसका नवीनतम निर्देश आया है। इसमें यह सुनिश्चित करने को कहा गया है कि हिमाचल प्रदेश और हरियाणा दिल्ली को पूर्व-सहमति के आधार पर पानी खासकर गर्मी के महीनों में उपलब्ध कराएं जब इसकी मांग बढ़ जाती है। पिछले सप्ताह सर्वोच्च न्यायालय ने हिमाचल प्रदेश को अतिरिक्त 137 क्यूंजक पानी छोड़ने की अनुमति देते हुए हरियाणा सरकार को निर्देश दिया कि वह हथिनीकुंड बैराज के माध्यम से बजीराबाद होकर दिल्ली को यह प्रवाह छोड़े। ताकि पेयजल का संकट कम किया जा सके। इस बीच दिल्ली भाजपा ने जल संकट की रित्थि पर विचार करने के लिए विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने की मांग की है। उम्मीद है कि इससे इस मुद्दे पर फैरन



अक्सर पानी की कमी हो जाती है और उसे 'राशनिंग' करनी पड़ती है। अमीर और कम आय वर्ग के परिवार दिन में केवल कुछ घंटे पानी सप्लाई के कारण गंभीर असुविधा का सामना कर रहे हैं। इस कारण नागरिकों को महंगे, अस्वास्थ्यकर और अनिश्चित निजी जल टैंकरों पर निर्भर रहना पड़ता है। जल समस्या के कारण सार्वजनिक स्वास्थ्य पर खतरा और गहरा हो गया है। पानी की कम उपलब्धता के कारण जल-जनित रोगों की संभावना बढ़ जाती है जिससे स्वच्छता मानक प्रभावित होते हैं। ऐसे में खराब स्वच्छता के कारण कालरा, दस्तरोग व टाइफाइड जैसी बीमारियाँ फैल सकती हैं। दिल्ली की जल संकट समस्या का समाधान करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की जरूरत है ताकि एक मानक कार्रवाई प्रक्रिया बनाई जा सके। आवश्यक है कि राज्य विधिक समझौतों का पालन करते हुए एक दूसरे के साथ ज्यादा सहयोग करें। जल सप्लाई ढांचे, जैसे शोधन व्यवस्थाओं तथा भंडारों के लिए आवश्यक निवेश उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इसके साथ ही पानी की बचत करने वाले व्यवहारों को बढ़ावा देते हुए पानी की रिसाइक्लिंग को बढ़ावा देना चाहिए ताकि उपलब्ध जल संसाधनों पर मांग में कमी आए। भूमिगत जल संभरण को बढ़ावा देने के लिए दीर्घकालीन पहलें की जानी चाहिए जिनमें वर्षा जल संचयन तथा निकटवर्ती जल भंडारों को पुनर्जीवित करना शामिल हैं।

अपने सहयोगियों के साथ कांग्रेस का विपक्ष में असर बढ़ा है। मोदी ने बदलती स्थिति के अनुरूप विभिन्न क्षेत्रीय क्षत्रपों से समर्थन प्राप्त कर लिया है।



कुमार चेलप्पन
(लेखक, द पायनियर के
विशेष संबाददाता हैं)

लोकसभा चुनाव समाप्त होने के बाद अब परिणाम स्पष्ट हो गए हैं तथा लोगों ने उनको स्वीकार कर लिया है। हालांकि, इससे एक प्रकार से देश में अनिश्चितता और अनिर्णय भी एक सीमा तक पैदा हुआ है। किसी पार्टी को अपने दम पर पूर्ण बहुमत नहीं मिला है, पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में लगभग 300 सदस्य हैं जो बहुमत के आंकड़े से 27 अधिक हैं। लेकिन विपक्ष की मुख्य शक्ति कांग्रेस संसदीयों का आंकड़ा सैकड़े तक भी नहीं पहुंच सका है, भले ही सहयोगियों के साथ पार्टी की स्थिति काफी बेहतर हुई है। राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' की रिपोर्टिंग करते हुए 'द पार्लियर' ने खबर दी थी कि यह राष्ट्रीय राजनीति में गेम चेंजर का काम कर सकती है। ऐसे में सवाल यह था कि क्या राहुल गांधी यात्रा से पैदा जोश लेके समय तक बनाए रखने में सफल होंगे या नहीं।

उस समय भी राहुल को ऐसी नेताओं की टीम की अनुपस्थिति का अनुभव हो रहा था जो उनकी उम्मीदों के अनुसार काम कर सके। हो सकता है कि आगली बार भाग्य उनका साथ दे। परिणामों की घोषणा वाले दिन कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए नरेन्द्र मोदी थोड़ा तनाव में दिखे थे। कुछ राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार उनके स्वर में पहले की तरह आत्मविश्वास नहीं था और वे कार्यकर्ताओं को पूरी तरह प्रेरित करने में सफल नहीं हुए। यह प्रधानमंत्री के रूप में उनके एक दशक लंबे कार्यकाल की एक विरल घटना कही जा सकती है। मोदी ने 2014 में लोकसभा चुनाव जीत कर दिल्ली में शानदार प्रवेश किया था। उनके नेतृत्व में भाजपा को अपने दम पर 282 सीटें मिली थीं, जबकि गठबंधन की संख्या 336 पहुंच गई थी। इसके बाद 2019 में लोगों ने जैसे प्लेट में रख कर भारत नरेन्द्र मोदी को सौंप दिया था जबकि नई दिल्ली मीडिया ने उनके खिलाफ लगातार अभियान चलाया था। उस समय भाजपा को अपने दम पर 303 सीटें मिली थीं, जबकि राजग को 353 सीटें मिली थीं। इसने नरेन्द्र मोदी को एक प्रकार



से बादशाह बना दिया था।

से बादशाह बना दिया था।

लेकिन 2024 ने एकदम अलग परिदृश्य प्रस्तुत किया है। करिशमाई, टूट, समझौता न करने वाले शक्तिशाली मोदी आज दो क्षेत्रीय क्षत्रियों-जदयू के नीतीश कुमार तथा तेदेपा के चंद्रबाबू नायडू की सहायता पर निर्भर हैं जिनकी स्वयं राष्ट्रीय महत्वाकांक्षायें हैं। राजग की पहली बैठक के पहले ही नीतीश कुमार और नायडू ने अपनी मांगें सामने रख दी थीं जिनमें जातीय जनगणना तथा अग्निवीर योजना रद्द करना शामिल है। यह भी समान रूप से महत्वपूर्ण है कि ये दोनों नेता समान नागरिक संहिता से सहमत नहीं हैं जो मोदी और भाजपा का 'ड्रीम प्रोजेक्ट' है। कहा जाता है कि नीतीश और नायडू ने कैबिनेट में ज्यादा सीटें मांगी थीं, पर मोदी सरकार के शपथ ग्रहण ने इन आशंकाओं को खारिज कर दिया है। मंत्रालयों का आबंटन होने पर स्पष्ट होगा कि इन दोनों सहयोगी दलों को कौन से विभाग दिए गए हैं। 2014 की लोकसभा चुनाव प्रचार तस्वीरों में चंद्रबाबू नायडू को आंध्र प्रदेश के अभियान में मोदी के पीछे चलते देखा गया थ। लेकिन दो-तीन साल में नायडू राजग से अलग हो गए क्योंकि प्रधानमंत्री ने आंध्र प्रदेश को विशेष दर्जा देने से इनकार कर दिया था। नायडू कांग्रेस के साथ चले गए थे और मीडिया के कछु हिस्सों ने दावा किया था कि वे देश के सर्वोच्च पद के दावेदार हैं। लेकिन 2019 के विधानसभा चुनाव ने नायडू की उम्मीदों को मिटाया दिया। वाईएसआर कांग्रेस के जगन मोहन रेड़ी ने विधानसभा में भारी विजय प्राप्त की थी। रेड़ी ने तेदेपा को पूरी तरह समाप्त करने का आक्रामक अभियान चलाया तथा नायडू और उनके परिवार के खिलाफ भ्रष्टाचार के अनेक आरोप लगाए। नायडू को इन आरोपों में गिरफ्तार कर जगन मोहन रेड़ी सरकार ने महीनों जेल में रखा गया।

ऐसे में नायडू को 2024 के विधानसभा चुनाव में समर्थन की जरूरत पड़ी और वे पूरी तरह भाजपा और मोदी के साथ आ गए। नायडू को अपनी उम्मीद से बहुत अधिक मिला और वे आंध्र प्रदेश में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने जा रहे हैं लेकिन कहा जाता है कि उनकी नज़रे प्रधानमंत्री की कुर्सी पर हैं। ऐसे व्यक्ति पर विश्वास करना कठिन होगा जिसन अपने सम्मुखीन तथा तेदेपा संस्थापक एन. टी. रामाराव की विरासत पर कब्जा कर लिया था। नीतीश कुमार पर भी 'आया राम गया राम' की परिघटना लागू होती है। ऐसे में आशंका है कि नीतीश कुमार राजग में कब्जा तक बने रहेंगे। हालांकि, उनको अगले साल बिहार में होने वाले विधानसभा चुनावों में राजग का मुख्यमंत्री चेहरा बताया

A large crowd of people, mostly men, gathered outdoors, some holding flags and raising their hands in a protest or rally.

बनी हुई है क्योंकि अतीत में उन्होंने 'सांप्रदायिक' भाजपा से पंथनिरपेक्षता को बचाने के बड़े-बड़े बादे किए थे। इन कारणों से भाजपा थोड़ी दुविधा में है। जगन मोहन रेड़ी के अच्छे कामकाज के बावजूद चंद्रबाबू नायडू ने अंश प्रदेश विधानसभा में प्रचंड बहुमत प्राप्त किया है। नायडू ने तत्कालीन प्रधानमंत्री देवगोड़ा को 1997 में पद से हटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और केवल दस महीने तक प्रधानमंत्री पद पर रहने की पीड़ा आज तक देवगोड़ा को सताती रहती है।

यदि 2024 की वर्तमान स्थितियों पर गौर करें तो स्पष्ट होगा कि भाजपा ही काफी सीमा तक ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करने की जिम्मेदार है। लोगों को याद होगा कि महाराष्ट्र में तत्कालीन विपक्षी नेता देवेंद्र फडनवीस को 2019 में केवल रांकापा नेता अजीत पवार के समर्थन के साथ मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई गई थी, लेकिन केवल चार दिन के बाद ही उनको यह पद छोड़ना पड़ा था। पहले फडनवीस और भाजपा ने अजीत पवार को 'भ्रष्टाचार की मूर्ति' बताया था, लेकिन उनके साथ गठबंधन करने में उसे कोई हिचक नहीं हुई। इसके बाद अजीत पवार अपने 'परिवार' में वापस चले गए, पर अंततः देवेंद्र फडनवीस

व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक

डालते हैं। परिणामस्वरूप, व्यक्तिगत व्यवहार पैटर्न जटिल और अक्सर प्रकृति में प्रतिकूल हो जाते हैं। मन कोबो और निरथक विचारों से भर जाता है और स्वयं और दूसरों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण कठोर हो जाता है।

पाजर हा जाता है। दुर्योधन के मन में अपने चचेरे भाइयों के प्रति पूर्वग्रह था और इस रवैये को उसके षड्यंत्रकारी चाचा शकुनि, भाई दुशासन और अंतरंग मित्र तथा प्रसिद्ध धनुर्धर कर्ण ने बढ़ावा दिया। इतिहास ऐसे भेदभावपूर्ण व्यवहारों के उदाहरणों से भरा पड़ा है। जर्मनी में नाजियों द्वारा असहाय यहूदी आबादी के खिलाफ किया गया नरसंहार इस बात का एक अनूठा और चरम उदाहरण है कि कैसे पूर्वग्रह लोगों और मानवता के वर्गों के बीच धृष्टि, भेदभाव और सामूहिक विनाश की ओर ले जाता है। युगों पहले एक सम्मानित जेन मास्टर ने कई भिखुओं और नौसिखियों को ध्यान के जोरदार सत्रों के लिए इकट्ठा किया था। इनमें से एक सत्र के दौरान एक शिष्य को उसके सहयोगियों ने चोरी करते रहे थे। जिसका लिए उन्होंने उसे लापता रहा।



सामने पेश किया गया और उपस्थित सभी लोगों ने मांग की कि उसे एक अनुकरणीय दंड के रूप में ज्ञान के मंदिर से निकाल दिया जाए। जेन मास्टर ने भिखुओं की विनती को नजरअंदाज़ कर दिया। एक बार फिर, शिष्य चोरी करते हुए पकड़ा गया। इससे भिखुओं की सभा क्रोधित हो गई और उन्होंने मांग की कि अपराधी को उसके द्वारा किए गए नुकसान की भरपाई करनी चाहिए ताकि मठ के सभी निवासियों पर इसका लाभकारी प्रभाव पड़े। जेन मास्टर ने गहन विचार के बाद परेशान छात्र को माफ़ कर दिया, जिससे अन्य लोगों में निराशा फैल गई। उनका मानना था कि छात्र में नैतिक स्पष्टता की कमी थी जबकि अन्य ध्यान के माध्यम से विकसित हुए थे। मैं उसे नहीं छोड़ सकता, मास्टर ने कहा। प्रभावित होकर, छात्र ने बदलने की कसम खाई, एक बेहतर इंसान बनने के लिए अपने चोरी के तरीकों को त्याग दिया।

मास्टर द्वारा प्रदर्शित विचार और करुणा इस बदलाव के लिए एकमात्र जिम्मेदार थे। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि सभी यह व्यक्ति और समाज के अमेरिकी व्यवसायी, हेरोल्ड एस जेनेन ने प्रसिद्ध रूप से कहा था, नेतृत्व का अभ्यास शब्दों में नहीं बल्कि दृष्टिकोण और वर्तमान में लिया जाता है।

ਪਿੰਡ ਹਰਿ ਸ਼ੇਟੀ ਅਤਕਾਰ

सरकार के मुखिया के तौर पर नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। इसके साथ ही वह देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद लगातार तीसरा कार्यकाल हासिल करने वाले दूसरे प्रधानमंत्री बन गए। आशा है कि गठबंधन सरकार होने के बावजूद मोदी सरकार का तीसरा कार्यकाल निर्विघ्न संपन्न हो जाएगा। खुद बीजेपी के पास सर्वाधिक 240 सीटें हैं। उसने 10 अन्य निर्दलीय सांसदों को अपने साथ कर लिया है ताकि इंडिया गढ़बंधन द्वारा कोई दाव-पेंच नहीं चलाएं जा सके। टीडीपी व जेडीयू के पास सरकार में शामिल होकर अपने लिए मंत्रालय दृष्टिलक्ष्य ऐसे गत्ता में सरकार चलाने के लिए बीजेपी का सहयोग पाने के लिए उनका एनडीए के साथ बने हठना जरूरी है। कार्यभार संभालते ही मोदी ने कृषकों के लिए 17वीं किस्त जारी कर दी और पहले दिन से ही अपने काम में समर्पण भाव से जुट गए हैं। नरेन्द्र मोदी जी की तीसरी जीत ने विश्व भर में भारतीय प्रजातंत्र का गौरव बढ़ाया है। मोदी के शपथ ग्रहण में भारत-मित्र बांग्लादेश की शेख हसीना के साथ ही मालदीव के राष्ट्रपति मुहम्मद मुझू़ की उपस्थिति संकेत देती है कि पड़ोसी देश मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार से बेहतर संबंध बनाए रखने तथा उनको और मजबूत करने के इच्छुक हैं।

અનુભાવિક વિાખ જરૂરી

सरकार के कामकाज को बेहतर बनाने, उसके द्वारा उठाये कदमों को सही राह पर चलाने और देश के उत्थान में बेहतर काम करने को प्रेरित करने के लिए रचनात्मक विपक्ष की ज़रूरत है। विपक्ष को बेवजह की तुच्छ आलोचना में संसद का समय खराब नहीं करना चाहिए। पिछले 10 वर्ष में विपक्ष ने सरकार की अनावश्यक व अति-आलोचना में संसद का समय तो गंवाया ही, साथ ही जनता के कामों को बेहतर करने में भी रुकावटें पैदा की। अब उसे पिछले रवैये में सुधार करना चाहिए ताकि सरकार देश की उन्नति में उठाये गए कदमों को सुचारू रूप से लागू कर सके।। सरकार को भी चाहिए कि वो विपक्ष की देशहित में कही गई बातों को सुने और अपने कामों को और अधिक जन-हितैषी बनाने में उनसे सहयोग ले। सत्ता और विपक्ष के बीच बहस ऐसी होनी चाहिए कि जनता भी दांतों तले अंगुली दबाने में पीछे न रहे। ऐसा होने पर ही लोकतान्त्रिक परम्परा भी निभेगी और राष्ट्र निर्माण में दोनों पक्षों का बेहतर योगदान भी होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने राजग के नव-निवार्चित सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा है कि सरकार बहुमत से बनती है, पर उसे सर्वानुमति बनाने

— ३ —

रायोप की चिन्ता

यूरोप में मुसोलिनी एवं हिटलर की मौत के बाद लगा था कि धुर दक्षिणपथ एवं उग्र राष्ट्रवाद से पीछा छूट गया। हाल ही में इसी विचारधारा को परास्त करने की 80 वर्षों वर्षांमां मनाई गई। लेकिन यूरोपियन संसद चुनाव के नतीजों ने मध्यमार्गी एवं समाजवादियों को चिंतित कर दिया है। इस चुनाव में दक्षिणपथी पार्टियों ने बड़ी बढ़त हासिल की है तथा जर्मन चांसलर ओलाफ शुल्ज, प्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनूएल मैक्रोन व ऑस्ट्रियाई चांसलर कार्ल नेहमर को अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा है। मरीन ले पेन की नेशनल रैली ने मैक्रोन के मध्यमार्गी पुनर्जागरण को करारी शिक्कस दी है। इसके बाद मैक्रोन

आतंकी इसला

जम्मू कश्मीर में आतंकियों ने कायराना हमला कर पिछ अपने मसुबू स्पष्ट कर दिए। वेष्णो देवी जा रही बस के ड्राइवर पर गोलियां दागना और इसके परिणामस्वरूप बस यात्रियों की मौत दुःखद घटना है। बस के खाई में गिरने से श्रद्धालुओं की मौत हुई। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में राजगण की विजय के बाद ऐसी घटना भारत सरकार को चुनौती देने वाली है। लेकिन भारत को यह चुनौती आतंकियों और उनके आकाओं को महंगी साबित होगी। लगातार तीसरी बार बनी मोदी सरकार पाक के आतंकियों का फज तो कुचलेगी ही, पाकिस्तानी आतंकी फैक्टरी को भी ध्वस्त करेगी। ऐसे समय जब जम्मू कश्मीर की जनता ने दशकों बाद भारी संख्या में मतदान कर देश की मुख्यधारा में शामिल होने की घोषणा कर दी है तथा जल्द ही जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, यह हमला आतंकियों और उनके आकाओं की निराशा भी प्रकट करता है। यह आतंकी हमला नवगठित सरकार के समक्ष सीमापार के आतंकियों या देश में उनके समर्थकों की ओर से बड़ी चुनौती है। इसका मुंहतोड़ जवाब तत्काल देना जरूरी है।

- योगेश जोशी, बड़वाह

